6

आदमी जिसने जिलाया

(2 राजाओं 4:18-37; 8:1, 5)

हम एलीशा और शूनेमिन स्त्री की कहानी के अपने अध्ययन को आगे बढ़ा रहे हैं। पिछले पाठ में हम ने एलीशा को जीवन *देने वाले* के रूप में देखा था जिसमें उसने एक लड़का दिलाने में सहायता की थी। इस पाठ में हम नबी को *जिलाने वाले* के रूप में देखेंगे। बाद में जब इस घटना का सम्बन्ध जोड़ा गया तो बार बार वैसी शब्दावली का इस्तेमाल हुआ:

> जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने *जिलाया* था, उस से उस ने कहा था ... (2 राजाओं 8:1)।

> जब [गेहाजी] वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को *जिलाया,* तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने *जिलाया* था वही आकर अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने लगी। तब गेहजी ने कहा, हे मेरे प्रभु ! हे राजा ! यह वही स्त्री है और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा ने *जिलाया* था (2 राजाओं 8:5)।

बेशक हम इस बात को समझते हैं कि जिलाने वाला तो परमेश्वर ही था, पर उसने इसे अपने विश्वास योग्य सेवक एलीशा के द्वारा किया। पाठ के समापन से पहले हम इस बात पर ज़ोर देंगे कि जिस परमेश्वर ने शूनेमिन स्त्री की सहायता की वही हमारे जीवनों में त्रासदी आने पर हमारी सहायता कर सकता है।

प्रसन्नता और दिल टूटना (4:18-20)

प्रसन्नता

पिछले पाठ के अन्त में स्त्री को उसका नया बच्चा मिला ही था। उसके बाद के दिनों की कल्पना करना कठिन नहीं है जिसमें मां एक नये अनुभव से चकित होती है, जैसे बच्चे के पहले शब्द और पहले कदमों पर।

इस पाठ का आरम्भ होने के समय कई साल बीत गए थे। 2 राजाओं 4:18 कहता है, ''और जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवनेवालों के निकट निकल गया।'' इस आयत से हमें यह लगता है कि लड़का उन्नीस-बीस साल का होगा। परन्तु बाद में हमें पता चलता है कि वह अभी भी इतना छोटा है कि वह अपनी मां की गोद में बैठता है और उसे उसकी मां द्वारा खाट पर ले जाया गया (आयतें 20, 21)। उसे ''लड़का'' (आयतें 26, 34) और ''लड़का'' (आयतें 29, 31, 32, 35) कहा गया है। शायद वह चार से छह साल के करीब होगा। यानी केवल इतना बड़ा कि भागकर अपने पिता के साथ खेत में जा सके।

तीन अवलोकन दिए जा सकते हैं। पहला, वचन यह नहीं कहता कि मां ने अपने बेटे को खेत में जाने की अनुमति दी। जब मैं तीन साल का था तो मैं अपनी किताबें इकट्ठी करता, अपने माता-पिता के घर से निकलकर छोटे स्कूल में चलकर जाता, जहां मेरे पिता पढ़ाते थे। (सिखाने की उनकी यह पहली नौकरी थी और वे बहुत घबराते थे।) हमारी कहानी वाले लड़के को पता होगा कि उसका पिता कहां है और वह अपनी मां की जानकारी के बिना वहां चला जाता होगा। दूसरा यदि लड़का अपनी मां की अनुमति से गया, तो कोई सेवक उसके साथ गया होगा। शायद जो सेवक उसे वापस लाया (आयतें 19, 20) वही उसे ले गया था। तीसरा आम तौर पर देहात के बच्चे छोटी उम्र में ही खेत में काम करने लगते हैं। पिता चाहता होगा कि उसका बेटा स्वयं देख ले कि फसल इकट्ठी करने के लिए क्या-क्या किया जाता है।

जैसे भी हो, लड़का अपने पिता के पास गया, जो कटाई करने वालों के साथ खेत में ही था (आयतें 18)। कटाई का समय था, जो वर्ष का सबसे व्यस्ततम समय था और एक छोटे लड़के के लिए वहां की हर गतिविधि बड़ी रोमांचकारी रही होगी। मैं उसके अनाज़ के पूलों के बीच में कभी इधर कभी उधर भागने की कल्पना करता हूं। बेशक पिता बीच बीच में बुढ़ापे में हुए अपने बच्चे को दुलार से देख लेता होगा।

दिल टूटना

लड़के ने चिल्लाते हुए अपना सिर पकड़ा होगा। ''आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर'' (आयत 19क)। हम यह नहीं बता सकते कि लड़के को क्या तकलीफ़ हुई थी। सम्भवतया हम सिर की चोट की बात निकाल सकते हैं। जो शायद किसी कटाई करने वाले के औजार से लगी हो, क्योंकि पिता निश्चित रूप से दिखाई देने वाले घाव पर अधिक ध्यान दे रहा होगा। अधिक पुराने टीकाओं में माना जाता है कि लड़के को लू लग गई थी, जो उस तेज़ धूप वाले इलाके में सम्भव है (देखें भजन संहिता 121:6; यशायाह 49:10)। परन्तु डोनल्ड वाइज़मैन का विचार है कि लू ''कटाई के समय एसड्रेलोन मैदान में भी बच्चों में बहुत कम होती होगी।''[11] नस का फूलना या दिमाग की रसौली सहित कई चिकित्सकीय कारण हो सकते हैं।[12] मर्ज़ जो भी था, पिता ने सोचा कि ऐसी कोई बात नहीं है जिसका इलाज मां की ममता से न हो सके। उसे अपने कर्मचारियों का ध्यान रखने के लिए खेत में रुकना आवश्यक था। सो उस ने एक सेवक से कहा, ''इसको इसकी माता के पास ले जा'' (2 राजाओं 4:19ख)।

अपने बेटे को घर में लाया जाने पर मां के लिए कितना बड़ा सदमा लगा होगा (देखें आयत 20क)। उसी दिन पहले उसने उसे खेलते हुए देखा था; उसने उसे मुस्कुराते और खिलखिलाते सुना था। अब वह सेवक की बाहों में कराहता हुआ तड़प रहा था। अपने लड़के को अपनी बाहों में लेते और गोद में रखते हुए उसका दिल डर गया होगा (देखें आयत 20ख)। बिलखते हुए उसके आंसू गिर रहे थे, ''मम्मी, मेरा सिर दुख रहा है; मेरा सिर दुख रहा है। कोई इसे रोके!'' अपने मन में मैं जैसे माताएं करती हैं, उसे दिलासे देते हुए आगे पीछे व्याकुल होते देखता हूं। मैं उसे अपने लड़के के माथे पर ठण्डी बर्फ की पट्टियां रखते और उसके मुंह को चूमते हुए उसे दिलासा देते देखता हूं। मैं उसके मन में आने वाली बातों की कल्पना कर सकता हूं: ''वह नहीं मर सकता। बिल्कुल नहीं! परमेश्वर ने उसे मुझे दिया है; निश्चय ही उसे मुझ से छीन नहीं

सकता!''[3] स्वर्ग में अपनी प्रार्थनाएं भेजते हुए वह कितनी व्याकुल हो रही होगी, ''मेरे बच्चे को मरने न देना परमेश्वर! मेरे बच्चे को मत मारना!''

उसके प्रेम के बावजूद, अपने बेटे को होश में लाने के उसके सब प्रयासों के बावजूद, उसकी मार्मिक फर्यादों के बावजूद, लड़का कमज़ोर और कमज़ोर होता गया। उसकी चीखें मध्य से मध्म होती रहीं जब तक अन्त में वह मर नहीं गया। अन्तिम बार उसकी सांस टूटने पर उसकी नन्ही देह शांत हो गई। हमारे वचन पाठ में केवल इतना कहा गया है, ''वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा, तब मर गया'' (आयत 20ख, ग)। जो लोग बाइबल के आश्चर्यकर्मों में विश्वास नहीं रखते उनका कहना है कि लड़का केवल बेहोश हुआ था, परन्तु ''[परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ] इतिहासकार अपनी बात को इससे बेहतर स्पष्ट नहीं कह सकता होगा[4] कि ''वह मर गया'' (आयत 32 भी देखें)।

क्या बच्चे, अबोध बच्चे मर सकते हैं? हम ऐसा होते रोज़ देखते हैं। वे क्यों मरते हैं? क्योंकि हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसे पाप ने दूषित कर दिया है। बहुत पहले आदम और हव्वा को बताया गया था कि यदि वे मना किया हुआ फल खाएंगे तो वे ''निश्चय मर'' जाएंगे (उत्पत्ति 2:17)। उनके आज्ञा तोड़ने के बाद, ''मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई'' (रोमियों 5:12)। यह एक विश्वव्यापी स्थिति बन गई, ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। कई लोग बुढ़ापे में मरते हैं, कई अधेड़ उम्र में, और कई बचपन में मर जाते हैं। त्रासदियां स्वर्गीय घर की हमारी तड़प को बढ़ाती हैं जहां, ''मृत्यु न रहेगी'' (प्रकाशितवाक्य 21:4), जहां हम अपनी बाहों से छिने नन्हे कीमती बच्चों को फिर से मिल सकेंगे (देखें 2 शमूएल 12:23)।

योजना और निवेदन (4:21-31)

योजना?

यह पता चलने पर कि उसका बेटा मर गया है शूनेमिन स्त्री की क्या प्रतिक्रिया थी? हमें उसके आंसुओं में फूट पड़ने की उम्मीद होगी। हमें उसके अपने साथ रोने के लिए अपनी सहेलियों को बुलाने की उम्मीद होगी। हमें उम्मीद होगी कि वह अपने सेवकों से लाश को दफ़नाने की तैयारी में सहायता के लिए कहेगी। इसके बजाय उसने कुछ अजीब ही किया: ''तब उस ने चढ़कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकलकर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई'' (2 राजाओं 4:21)। काश मुझे पता हो कि उसने वहां क्या किया; या मुझे संक्षेप में पता हो कि उस पल में उसके विचार क्या थे। निम्न टिप्पणियों से हो सकता है कि स्थिति स्पष्ट हो या न:

(1) नबी का कमरा उसके घर के नज़दीकी कमरों में से एक होगा। स्त्री को कई घण्टे तक बाहर रहना था। वह अपने बेटे की लाश को एक तर्कसंगत निश्चितता के साथ एलीशा के कमरे में रख सकती थी कि उसके बाहर जाने पर कोई उसकी देह को छेड़ेगा नहीं। आम तौर पर यहूदी लोग मुर्दे को उसी दिन दफ़ना देते थे। शायद मां ने यह सुनिश्चित करना चाहा कि उसके लड़के का कफ़न दफ़न आरम्भ न हो।

(2) मैंने सुझाव दिया है कि नबी का कमरा घर में दूसरे नज़दीकी कमरों में से एक होगा, परन्तु और भी तो कमरे हो सकते हैं जैसे उस स्त्री का अपना शयन कक्ष। यह तथ्य कि मां ने अपने बेटे को *नबी* के कमरे में रखा और फिर *नबी* से मिलने के लिए चली गई, सुझाव देता है कि उसे उम्मीद थी कि किसी न किसी प्रकार एलीशा इसमें हस्तक्षेप करे।

कहानी में आगे बढ़ते हुए इन टिप्पणियों को ध्यान में रखें। अपने बेटे को नबी के कमरे में रखने के बाद, ''उस ने अपने पति से पुकारकर कहा'' (आयत 22क)। शायद वह खेतों में चली गई, जहां वह था। उसने उससे कहा, ''मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहां झटपट हो आऊं'' (आयत 22ख)। ''परमेश्वर का भक्त'' (आयत 9), वह एलीशा को कहती थी।

वचन यह नहीं बताता कि वह एलीशा के पास क्यों जाना चाहती थी। वहां पहुंचकर जहां नबी था, उसने नाराज़गी जताई (आयत 28), पर निश्चित रूप से वह अपने बेटे की लाश को छोड़कर शिकायत करने के लिए इतनी दूर यूं ही नहीं गई थी। यह तथ्य कि जितनी फुर्ती से हो सका वह गई (आयत 24) और यह कि उसने एलीशा को उसके साथ वापस आने की ज़िद की (आयत 30) संकेत देता है कि वह चाहती थी कि नबी जितनी जल्दी हो सके अपने कमरे में उसके बेटे की लाश के पास जाए।

पिछले पाठ में मैंने सुझाव दिया था कि स्त्री के घर में भोजन करते समय कई बार, एलीशा अपने गुरु एलिय्याह की बातें करता था। यदि ऐसा है तो निश्चित रूप से उसने उन घटनाओं में सबसे अद्‌भुत घटना यानी एलिय्याह के सारपत की विधवा के पुत्र को जिलाने की घटना भी बताई होगी (1 राजाओं 17:17-24)। जहां तक बाइबली लेख की बात है, उस घटना से पहले और अब तक किसी ने किसी मुर्दे को जिलाया नहीं था। यदि शूनेमिन स्त्री ने उस कहानी को सुना था, तो शायद उसे उम्मीद थी कि एलीशा भी वैसा ही आश्चर्यकर्म कर सकता है जैसे उसने एलिय्याह की सेवकाई के जैसे और आश्चर्यकर्म किए थे (2 राजाओं 2:14 की तुलना 2 राजाओं 2:8 से करें; 2 राजाओं 4:1-7 की तुलना 1 राजाओं 17:8-16 से करें)। वाइज़मैन आश्वस्त था कि ''स्त्री का का बच्चा खोया था पर उसका विश्वास नहीं।''[5]

स्त्री की मंशा चाहे जो भी, उसने अपने पति से किसी सेवक से गधी लाने को कहा ताकि वह एलीशा के पास भागकर जाए और वापस आ सके (आयत 22ख)। उस आदमी को आश्चर्य नहीं हुआ कि उसकी पत्नी वहां जाना चाहती है, जहां नबी था। उसे आश्चर्य केवल समय से हुआ। उसने पूछा, ''आज तू उसके यहां क्यों जाएगी? आज न तो नये चांद का, और न विश्राम का दिन है'' (आयत 23क)। विश्राम का दिन यानी सब्त और नये चांद का दिन यहूदियों के लिए धार्मिक गतिविधि के दिन थे (देखें निर्गमन 20:8-11; गिनती 29:6; नहेम्याह 10:33; भजन संहिता 81:3)। सुझाव दिया गया है कि उस मूर्तिपूजक इलाके में विश्वासयोग्य लोग उन अवसरों पर एलीशा के पास इकट्ठा होते होंगे। परन्तु यह उन विशेष दिनों में से कोई नहीं था, जिस कारण नबी के पास जाने की अपनी पत्नी की इच्छा से पति उलझन में पड़ गया।

स्त्री ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। उसने केवल इतना कहा, ''कल्याण होगा'' (2 राजाओं 4:23ख)। कइयों का मत है कि ''कल्याण होगा'' शब्द इस बात का प्रमाण है कि स्त्री को कोई संदेह नहीं था कि उसका बेटा जिला दिया जाएगा, परन्तु एलीशा से उसके

आरम्भिक शब्दों से ऐसे आत्मविश्वास की झलक दिखाई नहीं देती थी (आयत 28)। अन्यों का मानना है कि उसकी बातों से संकेत मिलता है कि उसे मालूम था कि उसके बच्चे के साथ सब कुछ ठीक होगा, क्योंकि वह परमेश्वर के साथ था। यह सही है कि जब कोई छोटा बच्चा मर जाता है, तो उसकी आत्मा प्रभु के साथ रहने के लिए चली जाती है (देखें 2 शमूएल 12:23)। किसी भी बिछड़े माता-पिता के लिए यह बहुत बड़ी तसल्ली है। परन्तु फिर शूनेमिन स्त्री के एलीशा से कहे अगले शब्द (2 राजाओं 4:28) यह प्रभाव नहीं छोड़ते कि उसके मन में ऐसी बात है।

इब्रानी भाषा में स्त्री ने अपने पति को एक शब्द *shalom* से उत्तर दिया।[6] शालोम जिसका मूल अर्थ ''शांति'' है,[7] कई बार ''किसी को पक्का उत्तर देने से बचने के उद्देश्य से, पर साथ ही उसे संतुष्ट करने के लिए'' है।[8] जहां मैं रहता हूं वहां उसी प्रकार से अस्पष्ट शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे ''कोई बात नहीं,'' या ''इसकी चिंता मत करो।'' ऑस्ट्रेलियन लोग ''वह सही होगी, साथी'' (जिसका अर्थ है ''दोस्त, सब ठीक होगा'') संसार भर के लोगों में ऐसी ही अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल किया जाता है।

कुछ लोग चकित होते हैं कि पति ने और पूछताछ क्यों नहीं की? शायद वह कटाई के काम में लगा हुआ हो। अन्य चकित होते हैं कि उसने अपने बेटे के बारे में क्यों नहीं पूछा। हो सकता है कि उसने मान लिया हो कि यदि लड़का ठीक नहीं होता तो उसकी पत्नी घर से न जाती।[9] स्पष्टतया उसकी बातों से संतुष्ट होकर उसने उसकी विनती मान ली। सेवक और गधी कटाई में भी आवश्यक होंगे, पर वह आधा दिन उनके बिना चला सकता था।

स्त्री ने गधी के ऊपर बैठने पर सेवक से कहा, ''हांके चल; और मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना'' (आयत 24)। ''हांके चल'' का अर्थ है ''गधी को हांक; इसे खींच या एड़ी मार और जितनी तेज़ चल सकती है इसे चला।'' उसे कर्मेल पहाड़ पर जाना था (आयत 25क)। उसे पन्द्रह से बीस मील का सफ़र करना था और वह जितनी जल्दी हो सके नबी के पास जाने को उतावली थी। हम नहीं जानते कि उसे कैसे पता चला कि एलीशा पहाड़ पर होगा। शायद वह उस प्रसिद्ध अवसर के लिए जाने के समय पहले उसके घर में रुका था।

कई घण्टे चलने के बाद वह कर्मेल पहाड़ पर पहुंच गई (आयत 25क)। एलीशा ने उसे दूर से देखा (आयत 25ख)। नबी समझ गया कि कुछ गड़बड़ है। शायद जानवर को खींचने के उसके ढंग से; किसी स्त्री के लिए जीवन में उसके स्थान पर आना अमर्यादित माना जाता होगा। जब हम किसी से मिलते हैं जो परेशान लग रहा हो, तो आम तौर पर पहले हमें लगता है कि उसके या उसके परिवार के साथ कोई दुखद बात हुई है। एलीशा को इसी बात ने परेशान किया था। उसने अपने सेवक गेहाजी से कहा, ''देख, उधर तो वह शूनेमिन है। अब उस से मिलने को दौड़ जा, और उस से पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है?'' (आयतें 25ग, 26क)।

गेहजी स्त्री से भेंट करने के लिए भागा, पर जब उसने एलीशा द्वारा दिए गए सवाल पूछे, तो उसने केवल इतना उत्तर दिया, ''हां, कुशल से हैं'' (आयत 26ख)। मूल धर्मशास्त्र में फिर यहां ''*शालोम,*''[10] है और फिर उत्तर जान बूझकर अस्पष्ट दिया गया। जहां हम रहते हैं वहां यह पूछे जाने पर कि क्या हाल चाल है, आम तौर पर उत्तर ''ठीक है'' ही होता है। इसका अर्थ

''मैं ठीक हूं'' से लेकर ''मैं बिल्कुल ठीक तो नहीं हूं, पर मैं बताना नहीं चाहता'' कुछ भी हो सकता है। बाद वाला अर्थ उस समय की उस स्त्री की भावनाओं को दिखाता होगा। वह नबी के अलावा किसी दूसरे को अपनी परेशानी नहीं बताना चाहती थी।

निवेदन?

जब वह पहाड़ के नीचे तक पहुंच गई, तो एलीशा के पास पहुंचने तक ऊपर चढ़ती रही। दुख से परेशान, वह उसके आगे निढाल हो गई और ''उसके पांव पकड़ने लगी'' (आयत 27क)। कदमों में गिरना दीनता और निर्भरता का संकेत था (देखें लूका 5:8; मरकुस 5:22; 7:25)। पांव पकड़ना और स्पर्श की गहराई को बढ़ाने का संकेत बढ़ाना (देखें मत्ती 28:9)।

गेहाजी स्त्री के मर्यादा में न रहने से भयभीत हो गया। वह उसके पास गया कि ''उसे धक्का देकर हटाए'' (2 राजाओं 4:27ख; मत्ती 19:13 से तुलना करें)। एलीशा ने उसे रोका और कहा, ''उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है'' (2 राजाओं 4:27ख)। यह स्पष्ट था कि उस स्त्री के साथ कुछ बुरा हुआ है, पर एलीशा को यह पता नहीं था कि उसके साथ क्या हुआ है। परमेश्वर की प्रेरणा से बोलने वालों को भी दिन में चौबीसों घण्टे अलौकिक रूप में अगुआई नहीं मिलती थी।

अंत में जब उस स्त्री ने बात की तो उसने अपना दुख बता दिया। उसने अपने मन की पीड़ा खोलकर बताई: ''क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था? क्या मैं ने न कहा था मुझे धोखा न दे?'' (आयत 28; देखें आयत 16)। उसका बहुमूल्य बेटा बिन मांगे और अचानक मिला था; अब वह चला गया था! उसे ''यह सवाल सता रहा था कि प्रभु ने उससे वह क्यों छीन लिया जो अपना अनुग्रह और अपने वचन की भरोसे योग्यता दिखाने के विशेष प्रदर्शन के रूप में दिया गया था।''[11] एक अर्थ में मुझे यह समझ नहीं आती! ''मेरे साथ यह क्यों हो रहा है?'' एलीशा स्त्री की बातों से दुखी हो सकता था, पर वह नहीं हुआ। दुख में परेशान लोग आम तौर पर अति कर देते हैं और अपनी भावनाओं को जताने के लिए वे बेबस हो जाते हैं (देखें 1 राजाओं 17:18) और स्पष्टतया वह इस बात को समझता था।

स्त्री की बातों से स्पष्ट था कि उसके बेटे के साथ कोई खतरनाक बात हुई है, पर यह स्पष्ट नहीं था कि हुआ क्या है। क्या एलीशा को समझ आ गया कि उसका बेटा मर गया है, या उसे यह लगा होगा कि वह बीमार है या घायल हुआ है? क्या स्त्री ने कुछ और बातें विस्तार से बताईं जिन्हें लिखा नहीं गया है?[12] क्या प्रभु ने नबी को अतिरिक्त दृष्टि दी? हम इन सवालों का पक्का जवाब नहीं दे सकते।

लड़के के साथ जो भी बुरा हुआ था, उसके लिए उसी समय कुछ किया जाना आवश्यक है। एलीशा ने गेहाजी से कहा, ''अपनी कमर बान्ध, ... और चला जा'' (2 राजाओं 4:29क)। ''अपनी कमर बांध'' का अर्थ है अपने वस्त्र का सिरा अपनी बैल्ट के भीतर कर ले [देखें NIV] ताकि तू ''लम्बी छलांगें लगाकर भाग सके'' (1 राजाओं 18:46 से तुलना करें)। एलीशा ने आगे कहा, ''मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर न देना'' (2 राजाओं 4:29ख; लूका 10:4 से तुलना करें)। अभिवादन करने के समारोह आम तौर पर लम्बे होते थे। नबी अपने सेवक से जितनी जल्दी हो सके उस स्त्री के घर

में जाने को कह रहा था और यह कि कोई चीज़ उसकी चाल को धीमी न करे।

एलीशा ने गेहजी को अपनी छड़ी दी (आयत 29क) और उसे बताया कि जब वह उस मां के घर में पहुंचे, तो वह छड़ी ''उस लड़के के मुंह पर'' रखे (आयत 29ग)। अधिकार का एलिय्याह का प्रतीक उसका चोगा था; स्पष्टतया एलीशा का चोगा उसकी चलने वाली लाठी थी (निर्गमन 4:1-4; 14:16; 17:5, 6, 8-13 से तुलना करें)। एलीशा ने गेहजी को यह निर्देश क्यों दिए? कइयों का मानना है कि एलीशा का उद्देश्य अपने सेवक और स्त्री को यह दिखाने के लिए कि ऐसे *काम* नहीं होगा, सबक सिखाना था।[13] परन्तु यदि हम मान लें कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया लेखक वह सब बताता है जो स्त्री ने कहा, और यह कि ''प्रभु अभी भी एलीशा से उस समस्या को संक्षेप में अभी भी छिपा रहा था'' (2 राजाओं 4:27), यह अधिक सम्भावना लगती है कि नबी ने सोचा कि लाठी के होने से लड़के को सहायता *मिल सकती है,* उसके साथ चाहे जो भी बुरा हुआ हो।[14] यदि ऐसा है तो उसने लाठी देकर गेहाजी को आगे इसलिए भेजा क्योंकि सेवक जवान और फुर्तीला था।

मां ने एलीशा की बातों को इस संकेत के रूप में लिया कि वह स्वयं उसके घर नहीं जाएगा। क्या उसके यह कहने से कि ''यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूंगी'' (आयत 30क; 2 राजाओं 2:2, 4, 6 से तुलना करें) उसकी आंखों में चमक आ गई? अन्य शब्दों में, ''मैं तुझे लिए बिना नहीं जाऊंगी!'' नबी ने शूनेम में जाने की मंशा की होगी, उसने की थी या नहीं, अब वह ''उठकर उसके पीछे-पीछे चला'' (आयत 30ख)। फिर से स्त्री को गधी पर टांगें रखते और सेवक को जानवर के साथ-साथ, उसे आगे बढ़ने के लिए कहते देखें। इस विस्तृत विवरण के साथ कि नबी साथ मिलने की कोशिश करते हुए उनके पीछे पीछे जा रहा है।

इसी दौरान गेहजी स्त्री के घर में पहुंच गया, नबी के कमरे में सीढ़ियां चढ़ गया और ''छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रखा'' (आयत 31क)। वह रोमांचित हुआ होगा कि उसे यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। जब ''कोई शब्द न सुन पड़ा'' (आयत 31ख) यानी ''जीवन का कोई चिह्न न मिला'' (NEB), तो वह कितना निराश हुआ होगा। वह पीछे मुड़कर उस स्त्री और एलीशा के पास आया। मैं उसे अपने स्वामी से यह कहते हुए कि ''लड़का नहीं जागा'' (आयत 31ग) सिर हिलाते हुए देखने की कल्पना करता हूं। शायद स्त्री ने मन में सोचा, ''मुझे उन्हें बता देना चाहिए था कि लाठी से कोई काम नहीं होगा! इसी लिए मैंने स्वयं एलीशा के आने की ज़िद की!''

परीक्षा और विजय (4:32-37)

परीक्षा

स्त्री और पुरुषों ने सफ़र फिर से आरम्भ किया था। अन्त में वे घर पहुंच गए। लड़का दोपहर को मरा था (आयत 20), जिसके बाद मां कर्मेल पहाड़ पर जाकर लौट आई थी, सो शाम हो चुकी होगी। आम तौर पर ऐसे सफ़र के बाद एलीशा आराम के लिए अपने कमरे में चला जाता होगा। इस बार आराम करने का समय नहीं था। नबी जब अपने कमरे में पहुंचा और उसने दरवाजे में देखा, ''तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है'' (आयत

32)। हो सकता है कि समस्या की गम्भीरता से एलीशा पहली बार पूरी तरह से परिचित हुआ हो। अपने बिस्तर पर उस कीमती लड़के को लेटे देखकर जैसे वह गहरी नींद में सोया हो उसका दिल दुखी हुआ होगा।

एलीशा ने कमरे में जाकर मां और गेहजी को बाहर निकालते हुए (1 राजाओं 17:19, 23 से तुलना करें) दरवाजा बन्द कर लिया (आयत 33क; आयत 4क से तुलना करें)। जब वह लड़के के साथ अकेला था, तो उस ने ''यहोवा से प्रार्थना की'' (2 राजाओं 4:33ख)। वह तब से प्रार्थना कर रहा होगा जब से मां ने उसे कर्मेल पहाड़ पर देखा था, परन्तु अब जब उसने हालात देखे, तो उसकी प्रार्थनाएं और भी गम्भीर और एकाग्र हो गईं।

''वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उसके मुंह से और अपनी आंखें उसकी आंखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिए और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्म होने लगी'' (आयत 34)। एलीशा ने यह अजीब संस्कार क्यों किया? सम्भवतया इसलिए क्योंकि उसके गुरु ने एक लड़के को ऐसे ही जिलाया था (देखें 1 राजाओं 17:21, 22)। एलिय्याह पर एक पाठ में मैंने उस नबी के सारपत की विधवा के बेटे को जिलाने के विषय में लिखा था:

> याद रखें कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। ... हज़ारों लोग एलिय्याह के समय तक आराम करने के लिए ज़मीन में रखे गए थे और उनमें से कभी कोई वापस नहीं आया था। ... एलिय्याह असम्भव काम करने का प्रयास कर रहा था। ... उससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था और न उसके पास मुर्दों को जिलाने के तरीके वाली किताब थी।
>
> क्योंकि मुर्दों के जिलाने के ढंग पर एलिय्याह के पास कोई किताब नहीं थी, तो जो कुछ उसने किया वह सम्भवतया ''जो कुछ तू कर सकता है'' शीर्षक के अधीन आया होगा। उसके लिए अपने शरीर की गर्मायश उस लड़के को देना न्यायसंगत लगा होगा इसलिए उसने दी। इसके अलावा लड़के के सांस वापस आ जाने के बाद वह मुझे लगता है कि वह परिणाम से प्रभावित हुआ था, इतना प्रभावित कि उसने एलीशा को इसके बारे में बताया और इसी लिए एलीशा ने बाद में ऐसा ही किया (2 राजाओं 4)। क्या ऐसा ही किया जाना आवश्यक था? ...[15]

हमारी वर्तमान कहानी में आगे, इस तथ्य को न भुलाएं, कि एलीशा *परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा* था (2 राजाओं 4:33)। एलीशा का बच्चे के ऊपर पसर जाना रवाल को नदी के ऊपर मारने से उसका दोफाड़ होने पर लड़के में प्राण बहाल होने (2:14) या बुरे जल को शुद्ध करने के लिए इसमें नमक फैंकने (2:21) से कोई सम्बन्ध नही था। सामर्थ उस संस्कार में नहीं बल्कि सम्बन्ध में यानी यहोवा के साथ एलीशा के सम्बन्ध में थी। सामर्थ परमेश्वर की थी।

विजय

एलीशा के अपने आप को बच्चे के ऊपर पसर जाने के बाद, लड़के की ''देह गर्म हो गई'' (4:34), परन्तु अभी भी उसमें जीवन का कोई चिह्न नहीं था। नबी बिस्तर पर से उठा और इधर-उधर टहलने लगा (आयत 35क), शायद इस उलझन में था कि आगे क्या करे। उसकी

प्रार्थनाएं और भी आवेशपूर्ण हो गई होंगी। अन्त में उसने एक बार और एलिय्याह का तरीका अपनाने की कोशिश करने का निर्णय लिया। फिर से वह उस छोटे लड़के के ऊपर पसर गया (आयत 35ख)। इस बार उसके प्रयास रंग लाए। ''तब लड़के ने सात बार छींका और अपनी आंखें खोलीं'' (आयत 35ग)।

लेखक सात बार छींकने के विशेष अर्थ ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं।[16] पुराने कुछ टीकाओं में छींकने से विषैली चीज़ों के निकलने की बात कही गई है, पर उस में किसी विषैली चीज़ की चर्चा में जानलेवा मर्ज़ की बात नहीं लगती। यदि चिकित्सकीय व्याख्या की आवश्यकता हो तो याद रखें कि लड़का कटाई के धूल भरे खेत में बीमार हो गया था और उसके नथुने और नासूर धूल और पराग से अभी भी भरे होंगे।[17] अन्य लोग अंक सात में कोई सांकेतिक अर्थ देखते हैं जो यहूदियों में पवित्र अंक माना जाता था। उनका कहना है, ''आखिर आमतौर पर लोग दो ही बार छींकते हैं।'' परन्तु वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि हम इसके गुप्त अर्थ को तलाशें। सात बार छींकना संयोग की बात है जो किसी चश्मदीद द्वारा याद रखी गई होगी। एलीशा ने स्पष्टतया गेहजी को बताया कि क्या हुआ था और गेहजी ने दूसरों को बताया होगा (देखें 8:4, 5)।

वचन द्वारा लड़के के छींकने की बात के कारण की आसान व्याख्या है कि यह इस बात का सबूत था कि वह फिर से सांस ले रहा था! न केवल उसने छींका, बल्कि उसने अपनी आंखें भी खोलीं! उसके शरीर में प्राण लौट आए थे! परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा ''एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया'' (8:5)! मैं उस बच्चे को अपने मित्र, नबी की ओर देखते और मुस्कुराते व एलीशा के उस पर मुस्कुराते देखने की कल्पना कर सकता हूं।

स्पष्टतया गेहजी आवश्यकता पड़ने पर बंद दरवाजे के बाहर ही था। अब एलीशा ने उससे कहा, ''शूनेमिन को बुला ले'' (4:36क)। मां के सीढ़ियां चढ़कर आने पर, उसको पता नहीं होगा कि क्या हुआ है। उसे शायद उम्मीद थी कि एलीशा एलिय्याह जैसा आश्चर्यकर्म कर सकता है, पर वह फिर से निराश होने से डरती होगी। दरवाज़े में से आते और एलीशा को बिस्तर पर उसके लड़के की ओर इशारा करते हुए उसके आनन्द की कल्पना करें, जो अब जीवित था और उसने कहा, ''अपने बेटे को उठा ले'' (आयत 36ख)।

हमें उम्मीद होगी कि मां भागकर बिस्तर के पास जाएगी। इसके बजाय वह पहले तो धन्यवाद के साथ नबी के कदमों में गिर गई (आयत 37क)। तब और केवल तभी उसने अपने प्रिय बालक को अपनी बांहों में लिया (आयत 37ख)। उसके बाद वचन केवल इतना कहता है कि वह हमें आनन्द के आंसुओं की कल्पना करने के लिए जो बहे होंगे छोड़ते हुए ''निकल गई'' (आयत 37ग)। उसका लड़का पहले भी उसके लिए कीमती था, पर अब उसके साथ उसका हर पल प्रभु की ओर से एक विशेष उपहार था। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, और वह अपने बेटे को बड़ा और बलिष्ट होते देखती थी तो निश्चय ही वह अपने धन्यवाद से आसमान को भर देती होगी।

उलझन और तसल्ली

उलझन

जब हम उस स्त्री के अपने बेटे को खोने और उसके बाद की उसकी उलझन और दुख की कल्पना करते हैं तो आप में से कइयों को उसकी कहानी अपनी सी लगती है। शायद परीक्षाएं आपके जीवन में आई हैं और आप समझ नहीं पा रहे कि ये क्यों आई हैं। शायद आपकी नौकरी चली गई है जो अपने परिवार को चलाने के लिए आपको चाहिए थी। शायद दवाइयों के खर्चों से आपकी सारी बचत खर्च हो गई है। शायद आपकी पत्नी आपको छोड़ गई है और बच्चों को पालने का जिम्मा आप पर छोड़ गई है। हो सकता है कि शूनेमिन स्त्री की तरह आपका प्रिय बालक मर गया हो। त्रासदी जो भी हो, आपको लग सकता है कि आप चिल्ला रहे हैं, ''समझ नहीं आता! मेरे साथ ही ऐसा क्यों?''

तसल्ली

यदि त्रासदी आपको दो फाड़ कर रही है तो आप हमारे वचन पाठ से दो विवरणों में तसल्ली पा सकते हैं:

(1) मां के एलीशा से शिकायत करने पर नबी ने उसे डांटा नहीं। जब आपको लगता है कि आप परेशानियों में घिरे हुए हैं, तो परमेश्वर इस बात को समझता है–और वह अभी भी आपसे प्रेम करता है। (2) अन्त में परमेश्वर ने उसकी मन की पीड़ा को मिटा दिया और फिर से सब कुछ ठीक हो गया। मैं आपसे यह प्रतिज्ञा तो नहीं कर सकता कि प्रभु आपकी हर परेशानी को दूर कर देगा जैसे उसने 2 राजाओं 4:18–37 में किया, परन्तु मैं इतना वायदा कर सकता हूं कि वह आपकी परेशानियों को सहने बल्कि उन पर विजय पाने के लिए भी आपको सामर्थ देने के योग्य है। परमेश्वर आज भी परमेश्वर ही है। जो ''सब बातों को मिलाकर उसमें भलाई ही उत्पन्न करता है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)।

जीवनभर भरोसे का जीवन बिताने वालों ने एक महत्वपूर्ण नियम सीखा है कि *चीज़ें उनमें वैसे नहीं होती जैसी लगती हैं*। मैंने हाल ही में एक कहानी पढ़ी थी जो इसे दर्शाती है।[18] एक आदमी जो 1900 के आरम्भिक दशक में रहता था उसे एक प्रसिद्ध जहाज़ के पहले सफ़र पर संगीतकार के रूप में भाड़े पर लिया गया। उसके लिए यह एक बहुत बड़ा सम्मान था और वह मन ही मन बड़ा रोमांचित था। उसने अपने साज़ जहाज़ में पहले भेज दिए; पर जब वह स्वयं डॉक की ओर जा रहा था तो उसे रास्ते में अगवा कर लिया गया और उसे पूर्व में भेज दिया गया। कल्पना ही की जा सकती है कि उसके विचार कितने नकारात्मक हो गए होंगे: ''मेरे साथ यह क्यों हो रहा है? मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवसर था, और देखो क्या हो गया है! यह तो बहुत बुरी बात है। जो कुछ भी हुआ, मेरा जीवन बर्बाद हो गया! मेरे साथ यह क्यों हुआ? क्यों?'' अंतत: वह आदमी बच गया और चीन को चला गया। वहां उसे पता चला कि जिस जहाज़ पर उसे जाना था, टाइटैनिक नाम का वह जहाज़ डूब गया है जिसमें 1500 लोग मारे गए।[19] मुझे नहीं लगता कि उस आदमी ने अपने अगवा करने वाले को धन्यवाद का पत्र लिखा हो, पर आपको नहीं लगता कि उस त्रासदी के बारे में जिसमें वह पड़ा था, उसका विचार बदल गया होगा?

वर्षों से मैं कई मसीही लोगों को बीती विपत्तियों की कहानियां बताते और फिर यह जोड़ते सुनता आया हूं कि यदि वे त्रासदियां न होतीं तो उन्हें वे आशिषें न मिलतीं जो इस समय उन्हें मिली हैं।[20] कई बार तो वे यह निष्कर्ष निकालते हैं, ''मेरे साथ बहुत बढ़िया हुआ!''

हमारी कहानी में दुखी मां ने दो बार कहा, ''कुशल है'' (आयत 26; देखें आयत 23), चाहे मन में उसे *नहीं* लग रहा था और कि सब ''कुशल'' है। क्या बाद में उसने पीछे मुड़कर देखा और आश्चर्य करते हुए विचार किया, ''सब कुछ कुशल से *था* चाहे मुझे उस समय इसकी समझ नहीं थी।'' यदि आप परमेश्वर के विश्वासयोग्य बालक हैं, तो आप भरोसे के साथ, किसी भी जगह और किसी भी परिस्थिति में ''कुशल है'' कह सकते हैं।

जब शांति नदी की तरह मेरे रास्ते से गुज़रती है,
जब दुख समुद्र की लहरों की तरह आते हैं;
मुझे जो भी मिले, तू ने मुझे कहना सिखा दिया है,
''इट इज़ वैल, इट इज़ वैल विद माई सोल।''[21]

प्रभु में अपने विश्वास को बनाए रखें और उस पर भरोसा रखना न छोड़ें, और ''कुशल है'' शब्दों को अपने जीवन का आदर्श बना लें। परमेश्वर ने यशायाह नबी से धर्मी जन को यह आश्वस्त करने के लिए कहा था कि ''उनका भला होगा'' (यशायाह 3:10)। अपने प्रभु के विश्वासयोग्य रहें तो आप आश्वस्त हो सकते हैं कि ''आने वाले दुख या विपत्ति या निराशा के किसी भी मौसम में आपका भला ही होगा; मृत्यु की घड़ी में भी आपका भला होगा; न्याय के दिन, और उसके बाद अनन्तकाल में भी आपका भला होगा।''[22]

सारांश

अन्त में मैं वही प्रश्न पूछना चाहता हूं जो गेहजी ने स्त्री से पूछा था, ''*तू* कुशल से है? क्या तेरे और परमेश्वर के बीच कुशल है? क्या तेरा प्राण कुशल से है? संसार तुझ पर मुस्कुरा सकता है, मित्र तेरी चापलूसी कर सकते हैं, तेरा अपना मन तुझे धोखा दे सकता है।''[23] परन्तु यदि परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध सही नहीं है, तो आपके जीवन में कुछ भी सही नहीं हो सकता। क्या आप प्रेमपूर्वक आज्ञापालन में उसके पास आना चाहते हैं (मरकुस 16:16; इब्रानियों 5:9) ताकि वह आपको अपने बालक के रूप में गले लगा सके (गलातियों 3:26, 27)? क्या यह सम्भव है आप आज्ञा न मानने वाले बच्चे रहे हैं? यदि हां तो आपको उसके पास लौटना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)। आपकी जो भी आत्मिक आवश्यकता हो, अपने आपको उसके अनुग्रह और कृपा पर छोड़कर आप कह सकते हैं, ''सब कुशल है!''

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड जे. वाइसमैन, *1 एंड 2 किंग्सः ऐन इन्ट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1993), 204. [2]चार्ल्स बी. क्लेटॉन, संस्क., ''हैडेक,'' *दि अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन होम मेडिकल इन्साइक्लोपीडिया* (न्यू यॉर्कः रैंडम हाउस, 1989), 1:507. नस फूलना खून की नली के फूलने की सोज़िश है; इस मामले में यह दिमाग में खून की नली होगी। [3]जे. टी. हेडली, *सेक्रेड हीरोज*

एंड मारटर्स, संशो. व सम्पा. जे. डब्ल्यू. किरटन (लंदन: वार्ड, लॉक, एंड टेलर, तिथि नहीं), 194 से लिया गया। [4]जी. रावलिंसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 66. [5]वाइसमैन, 204. [6]सी. एफ़. केल एंड एफ़. डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेम्याह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 311. [7]सी. एस. इरविन, *इरविन 'स बाइबल कमैंट्री* (फिलाडेल्फिया: जॉन सी. विन्सटन कं., 1928), 116. [8]केल एंड डेलिश, 311. [9]स्त्री ने अपने पति को क्यों नहीं बताया कि उनका बेटा मर गया है? शायद उसे डर था कि उसका पति दफ़नाए जाने की प्रक्रिया आरम्भ करने की ज़िद करेगा। शायद उसे उम्मीद थी कि अपने बेटे की मृत्यु की कहानी अपने पति को बताने पर वह उसे जीवित दिखा सकेगी। [10]केल एंड डेलिश, 311–12.

[11]जे. रॉबर्ट वेनोय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 530. [12]यह तथ्य कि गेहाजी को मालूम था कि लड़के के मुंह पर छड़ी रखने के लिए घर में कहां जाना है (आयत 31) संकेत दे सकता है कि स्त्री ने और भी जानकारी दी। [13]केल एंड डेलिश, 312–13. [14]एक अवसर पर, पहनने की चीज़ों से जो पौलुस के बदन से छुई थी बीमार चंगे हो गए (देखें प्रेरितों 19:11, 12)। [15]''एलिय्याह,'' *ट्रुथ फॉर टुडे* (हिन्दी अनुवाद, पृष्ठ 46, 47) में डेविड रोपर, ''जब छत धंस जाती है।'' [16]यूनानी धर्मशास्त्र [पुराने नियम का यूनानी अनुवाद] में छींकने की बात नहीं है, पर संकेत मिलता है एलीशा *सात बार बच्चे के ऊपर पसरा था*। (कलाइड एम. मिलर, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 [अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991], 328). [17]मेरी बाइबल क्लास में एक नर्स ने ध्यान दिलाया कि आज भी बच्चे दमे से मर सकते हैं, कटाई वाले खेत की धूल से इफका अटैक आ सकता है। [18]कहानी को अनगी (रोपर) लवजॉय, एडमंड, ओक्लाहोमा, 22 जुलाई 2003, द्वारा मुझ से जोड़ा गया। एंजी ने ओक्लाहोमा सीटी, ओक्लाहोमा में एक बड़ी प्रदर्शनी में डिस्पले पर कहानी पड़ी। [19]अब तक का सबसे बड़ा यात्री जहाज़ टाइटैनिक आइसबर्ग (बर्फ के पहाड़) से टकराने के बाद अपने पहले समुद्री सफ़र में ही डूब गया (14–15 अप्रैल 1912)। [20]आप चाहें तो अपने अनुभव या दूसरों के अनुभवों से एक दो उदाहरण जोड़ सकते हैं।

[21]होराशियो जी. स्पेफर्ड, ''इट इज़ वैल विद माई सोल,'' *सॉन्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लूइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [22]हेनरी बलन्ट, *लैक्चर्स ऑन द हिस्टरी ऑफ़ एलिशा* (फिलाडेल्फिया: हरमन हूकर, 1839), 81. [23]वही, 79.